IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 6.252
Volume 2, Issue 2, July 2022

# महाकवि पुष्पदंत और उनका दार्शनिक दृष्टिकोण

डॉ० लालजीत राम
असिस्टेंट प्रोफेसर -हिन्दी
पं० रामलखन शुक्ल राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय आलापुर, अम्बेडकर नगर, उ०प्र०

**शोध सारांशः-** महाकवि पुष्पदंत केवल कवि नहीं, जैन दर्शन के गहरे व्याख्याता भी थे। उनका दर्शन उनके काव्य में रस बनकर घुला हुआ है। पुष्पदंत का दर्शन एकांगी नहीं है। वे जैन धर्म के 'अनेकांत' को जीवन में उतारते हैं – सत्य के कई पहलू हो सकते हैं। 'महापुराण' के पात्रों के चरित्र में वे अच्छाई-बुराई का सपाट विभाजन नहीं करते। हर व्यक्ति में देवत्व और मानवीय कमजोरी साथ चलती है। इसलिए वे 'स्याद्वाद' की भाषा में कहते हैं – 'हो सकता है'। यह दृष्टि हठधर्मिता के विरुद्ध है। पुष्पदंत के लिए अहिंसा केवल जीव-हत्या न करना नहीं, बल्कि मन-वचन-कर्म से किसी को दुख न देना है। 'जसहरचरिउ' में वे दिखाते हैं कि हिंसा का फल जन्म-जन्मांतर तक पीछा करता है। उनकी करुणा राजा से लेकर चांडाल तक सबके लिए समान है।

यह सामाजिक समता का दर्शन है। पुष्पदंत भाग्यवादी नहीं हैं। वे जैन कर्म-सिद्धांत को मानते हैं – जैसा करोगे वैसा भरोगे। पर साथ ही वे पुरुषार्थ पर जोर देते हैं। पुष्पदंत का दर्शन जैन धर्म की कठोरता को काव्य की कोमलता में ढाल देता है। वे मोक्ष को लक्ष्य मानते हैं, पर संसार से भागने को नहीं कहते। उनका मार्ग है – संसार में रहकर निस्संग रहो। लोक में रहो, पर लोकोत्तर बनो। यही उनका दार्शनिक संतुलन है जो आज भी प्रासंगिक है।

**मूल शब्द-** सत्कार, भवदै, सृष्टिकर्ता, अनादि, विन्हू, विणुहनु, वदिज्जै,नहन्तु, नहतिरं।

प्रत्येक दर्शन का अपना एक दृष्टिकोण होता है, जिससे संसार के जीव एवं जगत की व्याख्या होती है। अनुभव में आने वाले इस भेद से अभेद की व्याख्या करना या अनेकता से एकता की स्थापना करना दर्शन अपना कार्यक्षेत्र मानता है।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 6.252
Volume 2, Issue 2, July 2022

मनुष्य का ऐसा स्वभाव है कि वह दृष्टिगत भिन्नता से किसी ऐसे तत्वों की व्याख्या कर पहुंचने का प्रयास करता है, जिसे आसानी से समझा जा सके।

पुष्पदन्त की काव्य-रचना का प्रधान उद्देश्य सामाजिक मूल्यों को स्थापित करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति करने हेतु कवि जगह जगह पर काव्य-रचना को विराम देकर जैन सिद्धान्तों की व्याख्या की है। कवि को जैन मत के प्रति आदर तथा सम्मान का भाव उत्पन्न हुआ। उसका मुख्य कारण जैन मुनियों का सदाचारपूर्ण आदर्श जीवन था। उससे प्रभावित होकर एक तरफ व्यापारी वर्ग ने अधिक मात्रा में अपना धन मटकों और मन्दिरों के निर्माण में लगाया, दूसरी ओर राजा वर्ग ने जैन विद्वानों को आश्रय और सहायता प्रदान की। पुष्पदन्त जैन मतानुयायी थे, जिन चरण कमलों में उनकी अटूट भक्ति थी, उसी भक्तिभावना से प्रेरित होकर जीवन यापन किया, परन्तु अभावपूर्ण जीवन उनके विचारो को विचलित न कर सका और जीवन से कभी मुख मोड़ने का विचार भी नही किया। अनेक झंझावात आने पर भी आशा का दीपक उनके पथ को आलोकित करता रहा। इसलिए उन्होंने गिरि-कन्दराओं में फलादि खाकर सम्मान पूर्वक जीवित रहना श्रेयष्कर समझा।

मान्यखेट के राजा भरत के मंत्री नन्न के निवेदन पर कवि राजाश्रय में पहुंचा। वहीं भरत ने कवि को उत्तम वस्त्र-भोजनादि से सत्कार किया। कुछ विश्राम करने के पश्चात भरत ने काव्य-रचना करने की प्रार्थना की। पुष्पदन्त ने अपने काव्यों में जहां जैन धर्म के सिद्धान्तों का दृढ़ता के साथ प्रतिपादन किया है, वहीं उसने अन्य मतों का खण्डन भी किया है। इन मतों में प्रमुख हैं वैदिक, सांख्य, चार्वाक तथा कौल। कवि ने इन मतों का संक्षिप्त विवेचन कर अपने तर्कों के आधार पर उनकी अप्रामाणिकता सिद्ध की है।

कवि वैदिक मत की व्याख्या करते हुए कहता है कि यदि इश्वर इस भुवन तल का निमित्त है तो उसके विशेष गुण क्या हैं? यदि वह नित्य है तो परिणाम सिद्ध नहीं हो सकता और निष्परिणाम के कर्म सिद्ध कैसे होंगे? जगत यदि ईश्वर की प्रेरणा से चलता है तो तपस्या आदि करने से क्या लाभ है।

'जै जै जिउ सिउ पेरनै, तो किं कायमै तव भवदै'।'

जगत और ईश्वर के सम्बन्ध में प्रमुख देवता ब्रह्मा, विष्णु और महेश के सम्बन्ध में कहा है कि ब्रह्मा, विष्णु और महेश ये देवता मात्र हैं। इनमें से कोई भी सृष्टिकर्ता नहीं हो सकता। जैसे बिना हाथी के उसका कुल नहीं होता, वैसे ही बिना मानव के उसकी जाति कैसे हो सकती है? अतः यह जगत अनिधन, अनादि सिद्ध होता है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 6.252
Volume 2, Issue 2, July 2022

जिह सिवु तिह बम्भु ण विन्हु अथि / विणुहत्थिठलेण णहोइ हत्थि।

विणु णर संताने मणुठ केम/विणुहन्नु अण जगु सिद्ध एम'

कर्मकाण्ड के अन्य विश्वासों का खण्डन करता हुआ कवि कहता है कि वे यदि मीन- भक्षी तथा स्नान से शुद्ध होने वाले वक और ब्राह्मण पूज्य पद प्राप्त कर लेवें तो स्वंय का आचरण करने वाले मुनियों की क्या दशा होगी? उनकी कौन वन्दना करेगा:

'भिण गिलंतु णहंतु जय सुज्जै ता कंको महामुनि, वदिज्जै चरंतु नहतिरं किं किज्जै परमुनि'

कवि पुष्पदन्त ने सांख्य दर्शन का खण्डन करते हुए कहा है कि एक ही तत्व नित्य है. ऐसा क्यों माना जाता है? जब एक देने वाला होता है और दूसरा लेने वाला कैसे लेता है? कणाद (वैशेषिक दर्शन के आचार्य) कपिल, सुगत (बौद्ध) द्विज शिष्य आदि कुमतिशील हैं तो लोगों को अपने-अपने सिद्धान्तों की ओर आकर्षित करते हैं:

एक लोठ माहिठ कुमईसहिं / गकणयर कविल सुगय दियसीसहिं।'

चार्वाक दर्शन का पुरातन नाम लोकायत है। इसे पुष्पदन्त ने वैकण्डिक कहा है। यह दर्शन शुद्ध भौतिकवादी है. इसके अनुसार लोक ही आत्मा की क्रीड़ा-भूमि है, शरीर ही आत्मा है, जब तक शरीर है, तब तक सुख प्राप्ति की चेष्टा करनी चाहिए। महापुराण में राजा महाबल का मंत्री महामती स्वयं कहता है कि भूत चतुष्टय के सम्मिलन मात्र से जीवन किसी भी प्रकार उत्पन्न नहीं हो सकता। यदि ऐसा हो तो औषधियों के क्वाथ से किसी पात्र में भी जीव शरीर उत्पन्न हो जाते, परन्तु ऐसा नहीं होता :

विणु जीवनेन कहिं भूपहं मिलन्ति, कास्याकारेण न परिण्वन्ति।

जय परिण्वन्ति भसहि कुहेठ, तो कध्यापिधरि सरिरहौ।।'

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 6.252
Volume 2, Issue 2, July 2022

बौद्ध, जैन, न्याय आदि दर्शन अनुमान को प्रमाण मानते हैं, वहीं चार्वाक केवल प्रत्यक्ष को ही प्रमाण मानते हैं। उनकी दृष्टि में यह स्थूल जगत ही सत्य है। अन्य सब झूठा है। वे संसार के चारतत्व पृथ्वी, जलं, अग्नि और वायु को मानते हैं, इन्हीं से सम्पूर्ण संसार की सृष्टि का निर्माण हुआ है। जब ये भूत चतुष्टय विशेष मात्रा में सम्मिलित होते हैं। जैसे-गुड़, जल आदि पदार्थों में मदिरा के गुण न होते हुए भी एक साथ सम्मिलित किये जाने पर रासायनिक क्रिया द्वारा उसमें मद्य-शक्ति आ जाती है, वैसे ही भूत चतुष्टय से चैतन्य की उत्पत्ति होती है।

कवि के दार्शनिक दृष्टिकोण ने जैनधर्म के जन्मान्तरवाद के सहारे जन समुदाय को दुष्कर्म से विमुख करके धर्म तथा सदाचार के पथ की ओर प्रेरित किया है।

**संदर्भः-**

1.पुष्पदन्त कृत महापुराण चारिउ- 20/3/2

2.पुष्पदन्त कृत महापुराण चारिउ-20/3/2

3. पुष्पदन्त कृत जषहर चरिउ प्रा। सं. 3/30/1-2

4. पुष्पदन्त कृत नयकुमार चरिउ, पृ. 9/11/7

5. महापुराण चरिउ पृ. 20/18/10/11